ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 44 कुल पृष्ठ-8 20 से 26 जुलाई, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. कृ.-10

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्यालय दयानन्द भवन 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान) नई दिल्ली के सभागार में दिनांक 1 जुलाई, 2023 को प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों की बैठक सम्पन्न हुई

आर्य समाज संगठन को प्रत्येक प्रान्त में मजबूत करने पर हुआ विचार-विमर्श

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती को लेकर विशेष चर्चा हुई

गत् 1 जुलाई, 2023 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्यालय दयानन्द भवन 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली के सभागार में एक महत्त्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई जिसमें आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ-साथ प्रत्येक प्रान्त के पदाधिकारियों, प्रमुख विद्वानों एवं गणमान्य महानुभावों की विशेष उपस्थिति रही। यह बैठक सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने बड़ी ही कुशलता के साथ किया।

इस महत्त्वपूर्ण बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के समक्ष संगठन की गतिविधियों की जानकारी सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने प्रस्तुत की तथा चर्चा के दौरान स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा के संगठनात्मक ढांचे की जानकारी विस्तार से रखी। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि हम सभी को मिलकर आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा स्वामी दयानन्द जी के मन्तव्यों के अनुरूप पूरे देश तथा विश्व में कार्य करने की आवश्यकता है। क्योंकि हमारा लक्ष्य है कि हम पूरी उदारता के साथ सभी को साथ लेकर चलें और आर्य समाज की विचारधारा के अनुरूप कार्य करें। आप सभी दूर-दराज के प्रान्तों से इतने कम समय में इस बैठक में पधारे हैं तथा आपने संगठन के प्रति अपनी निष्ठा का जो परिचय दिया है उससे हम सभी उत्साहित हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

भारत की बेटी अंतिम कुंडू ने जॉर्डन में जीता सिल्वर मैडल

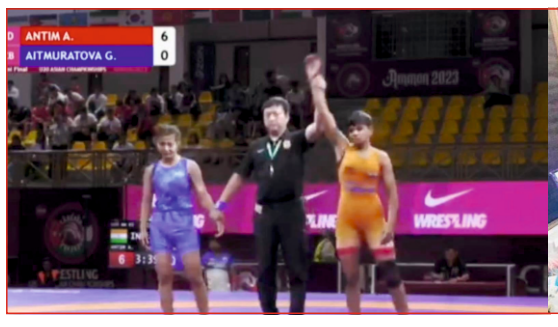

जॉर्डन के ओमान शहर में आयोजित एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में भारत के हरियाणा प्रान्त के रोहतक जिले के टिटौली ग्राम की बेटी अंतिम कुंडू ने 65 किलोग्राम भार वर्ग में सिल्वर मैडल जीत कर पूरे देश को गौरवान्वित किया है। जिस समय कुश्ती का दंगल चल रहा था उस समय अंतिम के परिवारजन तथा स्वामी आर्यवेश जी एक साथ टीवी के सामने बैठे रहे। जीत होते ही सभी ने खुशियां मनाई। अंतिम कुंडू के चाचा तथा कोच अजयपाल आर्य ने सभी को लड्डू बांटे तथा शुभकामनाएं दी।

आर्य समाज के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि बेटी अंतिम कुंडू ने न सिर्फ गाँव बल्कि पूरे देश तथा आर्य समाज का नाम रोशन किया है। समाज में बेटियों को जब से बराबर का अधिकार दिया जाने लगा है वो ओलम्पिक में भी मैडल लाने लगी हैं। मेडल जीतकर भारत वापस आने पर टिटौली गाँव पहुंचने पर 19 जुलाई, 2023 को अंतिम कुंडू का भव्य स्वागत किया गया।

स्वागत समारोह के दौरान कुंडू खाप के प्रधान श्री जयवीर कुंडू ने कहा कि अंतिम ने हम सबका मान बढ़ाया है। पूरी कुंडू खाप को अंतिम कुंडू पर गर्व है। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश, श्री रजनेश कुंडू, स्पोर्ट्स एकेडमी टिटौली के प्रधान श्री सुरेश, श्री अजयपाल सहित गाँव के सैंकड़ो लोगों ने बेटी को शुभकामनाएं दी।

ज्ञात हो कि भारत की बेटी अंतिम कुंडू ने दूसरे राउंड में कजाकिस्तान की खिलाड़ी को 10-0 से हराया, क्वाटर फाइनल में जापान की खिलाड़ी को 12-2 से हराया, सेमी फाइनल मुकाबले में उज़्बेकिस्तान की खिलाड़ी को बाई फॉल चित किया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

उत्कृष्ट जीवन के छः अनुपम सूत्र

– मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति, एम. ए.

ओ३म्! इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहिचित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषम् रयीणाम् रिष्टिं तनूनांखाद्यानं वाचः सुदिनत्वमहाम।।
ऋग्वेद 2–11–6

शब्दार्थ इन्द्र=ऐश्वर्य सम्पन्न ईश्वर। अस्मे = हम सबके लिए। श्रेष्ठानि श्रेष्ठ, उच्च। द्रविणानि = धन (बहुवचन)। दक्षस्य=उत्साह सहित, बड़ी चतुराई के साथ। चित्तिम्=ज्ञान को। सुभगत्त्वम्=सौभाग्य को। रयीणाम+पोषम्=धनों की पुष्टि को। तनूनाम=अरिरिष्टम् शरीर की हानि के अभाव को, निरोगता को। वाचः+स्वाद्यानम्=वाणी के स्वाद को। अन्हनाम+सुदिनत्वम्=सुन्दर दिनों की शोभा।

भावार्थ – ऋग्वेद के इस प्रेरणादायी मंत्र में जीवन को उत्कर्षमय, श्रेष्ठ बनाने के लिए मुख्यतः छः प्रकार के साधना (तत्वों) की जैसे सत्कर्म का ज्ञान, सौभाग्यपूर्ण जीवन, अपार धन सम्पदा, स्वस्थ सबल शरीर एवं सुख–सुविधापूर्ण दिन (समय)।

आइये! इन छः सूत्रों का कुछ मनन–चिन्तन इस प्रकार करें। ध्यान रहे, शास्त्रों के बड़े–बड़े विचारों को एक सूत्र में बांधने के पश्चात् ही उनके गंभीर भाव ग्रहण किये जा सकते हैं।

चिन्तन मनन (स्वाध्याय)

प्रथम (1) कर्म के प्रति उत्साहपूर्ण ज्ञान – हमारा कर्म सुकर्म हो। वह कर्म कैसा है? इसका पूर्ण चिन्तन–मनन पूर्व में ही कर लेना होगा। उस सुकर्म की प्रकृति, गरिमा, उपादेयता तथा विधि का ज्ञान होना भी बहुत जरूरी है। यदि एक स्थान पर पुस्तक, लेखनी, कागज, प्रकाश, टेबल–कुर्सी आदि सब व्यवस्थित रखें हों, परन्तु हमें हमारे ज्ञान–सहित कर्म के प्रति उत्साह न हो, तो उपरोक्त उपादान (साधन) किस काम के? काम को काम के लिए करना है, मानों रिक्त स्थान की पूर्ति मात्र है वह। नहीं काम के उद्देश्य, लक्ष्य की गुणवत्ता के कारण हमारे मन में उत्साह भी हो। उत्साह वह एक मानसिकता है, जिसके कारण कर्म के प्रति रुचि और सजगता उत्पन्न होती है। इसलिए वेद ने ठीक ही कहा हमारा कर्म सुकर्म होना चाहिए तथा उस कार्य की पूर्ति के लिए मन में एक विशेष उत्साह भी होना चाहिए उत्साह की प्रेरणा से नये–नये आविष्कार, खोजें, शोध प्रबन्ध आदि सत्कर्म किये जाते हैं। उत्साह के रहते हुए उस कर्म को करने की 'तकनीक' का ज्ञान भी होना नितान्त आवश्यक है। ज्ञानमय कार्य ही सफलता का प्रथम कदम है।

(2) सुभगत्वं – इस द्वितीय गुण की महत्ता विशिष्ट ही है। इसका सामान्य सा अर्थ है सौभाग्य। प्रायः यह देखा गया है कि उन्नति के सारे साधन और सर्वोचित अवसर मिलने पर भी मनुष्य उन्नति करने पाता है। यहाँ पर प्रसंगवश कर्मफल सिद्धान्त की अति संक्षेप चर्चा की जानी है। संचित, क्रियमाण और प्रारब्ध आदि कर्मों के फल प्राप्त होते ही हैं। कर्म–फल सिद्धान्त का यह लौह सिद्धान्त है कि कर्म, अकर्म, विकर्म, कुकर्म चाहे मनसा, वाचा, कर्मणा से किया गया हो, उसका फल अनिवार्यतः प्राप्त होता ही है। दुनिया की कोई शक्ति कर्म–फल में न तो वृद्धि कर सकती है और न कमी। परमात्मा का एक नाम अर्यमा है अर्थात् वह न्यायकारी है। वह प्रत्येक को कर्म–फल अवश्य ही देता है। यहाँ एक बात का और ध्यान रखना है 'जाको प्रभु दारुन दुःख देही, ताकि मति पहले हर लेही' यह मूर्खों का सिद्धान्त है। यह बहकाने वाली बात है। परमात्मा तो प्रत्येक जीव को प्रेरणा देता है, बस इतना ही। इसके बाद प्रेरित व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र होने के कारण अपने संस्कारों, इच्छाओं आदि से निर्देश पाकर सुकर्म या कुकर्म करने में स्वतन्त्र है और कर्म–फल पाने में पूरी तरह परतंत्र है। इस प्रकार 'प्रारब्ध' के अनुसार फल तो भोगना ही पड़ता है। कर्म–फल कभी भी हस्तान्तरित नहीं होता। कर्त्ता ही कर्म का उत्तरदाता तथा फल भोगने का भी उत्तरदायी है। रूढ़ भाषा में 'प्रारब्ध' को भाग्य कहा जाता है, इसीलिए भाग्य का निर्माता वह स्वयं है।

हाँ, तो चर्चा हो रही थी, प्रारब्ध के महत्त्व की। भाग्य कर्मानुसार ही बनेगा। योगिराज पतंजलि ने 'हेयं दुःखमनागतम' (यो. द. 2–16) कहा है। इसलिए दूसरी महत्त्वपूर्ण बात कही है कि उन्नति के सारे साधन भी हों और कर्मानुसार प्रारब्ध भी उत्तम हो।

(3) पौषंरयीणाम् – सांसारिक जीवन में 'धन' का बड़ा महत्त्व है। हमारी दैनिक प्रार्थना में भी ऋग्वेद (10–121–10) के प्रसिद्ध मंत्र में कहा है – प्रजापते न त्वदेता न्यन्यो विश्वाजातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयोरयीणाम्।। .... कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के पतयः=स्वामी स्याम=होवें। अथर्ववेद में अनेक स्थलों पर मनुष्य को धन रूपी समुद्र में तैरने के लिए कहा है, किन्तु .... उसमें डूब मरने के लिए नहीं। यहाँ यह ध्यान रखना है कि धन केवल सा+धन=साधन है। अंतिम लक्ष्य नहीं। जीवन उत्कर्ष के लिए धन भी आवश्यक है, परन्तु धन ही सब कुछ हैं, यह सोचना उचित नहीं। पश्चिमी साम्यवाद में धन ही सब कुछ है, माना जाता है, जबकि वैदिक समाजवाद में – 'रोटी, कपड़ा और मकान तथा शिक्षा, रक्षा, विद्या और भगवान' माना गया है। भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण पश्चिमी देशों में प्रायः प्रत्येक 50 वर्ष में 'दर्शन' बदलता रहता है। इसी प्रकार आगे कहा है –बस्वी ते अग्ने सन्दृष्टि रिषयते मत्यादि (ऋ. 6–16–25) अर्थात् हे अग्ने! धनाभिलाषी मनुष्य के लिए तेरी 'सत्दृष्टि' वस्वी=धनदायी हों। कर्म और भाग्य, पुरुषार्थ और प्रारब्ध मिलकर धनवृद्धि के साधन देते हैं। हरिय का अर्थ परोपकार, कल्याण में आने वाला धन ही रयि है। कंजूस–कृपण का धन अपवित्र होता है।

(4) अरिष्टिम् तनूनाम – इस पर विचार करने हेतु आगे बढ़ने के पूर्व पाठकों के ध्यान में यह बात लाना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित तथा वर्तमान में प्रचलित (द्वितीय संस्करण) संस्कार विधि में जातकर्म संस्कार के मध्य में एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग पर पिता द्वारा इस मंत्र का जाप (वृत्ति) करने के लिए कहा है। उसमें कहा गया है – बालक (सन्तान) के कंधों पर कोमल स्पर्श से हाथ धर अर्थात् नवजात शिशु (पुत्र/पुत्री) के स्कंधों पर हाथ का बोझ न पड़े, धर के यह मंत्र बोले –

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानिद्रविणानिधेहि ..... सुदुनत्वअनहाम।

19वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द ऐसे महापुरुष उत्पन्न हुए हैं जिन्होंने बालक या बालिका के संस्कारगत विधियों को समान रूप से सम्पन्न कराने के समान पथ प्रस्तुत किया है –

अरिष्टिम तनूनाम अर्थात् पहला सुख निरोगी काया। वैद्य का कहना है शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम्। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनके उद्देश्य पाँच कमेन्द्रिय और पाँच ज्ञानेन्द्रिय सहित शरीर पूर्ण शरीर कहलाता है। अंग–भंग अथवा त्रुटिपूर्ण शरीर जीवन यात्रा में बड़ा बाधक होता है। कहा है –

पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख पास हो माया, तीसरा सुख पुत्र आज्ञाकारी, चौथी सुख सतवंती नारी।

ऋग्वेद (11–6–75–12) में कहा है – अश्मा भवतुनस्तनः अर्थात् हमारा शरीर वज्र समान हो। कहते हैं माता अंजनि के गोद से एक बार शिशु हनुमान नीचे गिर पड़े थे। शिशु हनुमान हृष्ट–पुष्ट थे कि जिस पत्थर पर वे गिरे, वह तड़क (फूट) गया, पर हनुमान को तनिक भी चोट नहीं आई।

(5) स्वाध्यानम् वाचः – हमारी वाणी में मिठास हो। जिह्वा नामक इन्द्रिय दो कार्य करती है – आग और जल का कार्य। कहते हैं हथियार का घाव उपचार द्वारा ठीक हो सकता है, परन्तु वाणी (कठोर) का घाव कभी नहीं भरता। संतप्त तथा दुःखी हृदयों को मधुर वाणी बड़ी शांति पहुँचाती है। प्रतियोगिताओं के समय वाणी की आवाज जोश भर देती है। निराश व्यक्ति की पीठ पर हाथ फेरना तथा मीठी वाणी, सान्त्वना के शब्द अमृत का काम करते हैं। ठीक इसके विपरीत कठोर वाणी, व्यंग्यपूर्ण वाणी अनेकों अनिष्टों को जन्म देती है। बाल्मीकि रामायण में एक स्थान पर आया है।

वन में हा! लक्ष्मण, लक्ष्मण की चीत्कार सुनने पर सीता ने देवर लक्ष्मण से अपने अग्रज के लिए दौड़कर रक्षा करने के लिए कहा। लक्ष्मण उस कातर वाणी को छद्मवाणी मान कर तथा किसी अनिष्ट की शंका को देखकर वहाँ से जाना नहीं चाहते थे। परन्तु माता सीता ने देवर लक्ष्मण को इस अवसर पर ऐसे कठोर शब्द कहे, जिसे सुनकर लक्ष्मण तिलमिला उठे और न चाहते हुए भी वहाँ से धनुष वाण लेकर चल पड़े। बस, जो होना था, वही हुआ। लक्ष्मण के जाते ही छद्मरूप धारण किये रावण आया और सीता का अपहरण कर वहाँ से ले गया। यदि सीता जी लक्ष्मण को कटु और तीखा वाक्य नहीं बोलती तो आगे की रामायण बनती नहीं। अर्थात् कटु कठोर वाणी बोलने से मनुष्य स्वयं दुःखी होता है। संकट में पड़ता है और दूसरे को भी बेचैन तथा घायल करता है। किन्तु ध्यान रहे –

यह जिह्वा बावरी, कह गई सरग पताल।
आपन कह भीतर चली, जूते खात कपाल।।

इसीलिए संध्या में कहा गया है – ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। मेरा कंठ मीठी वाणी बोलने वाला हो। मैं स्वयं मीठी वाणी बोलूं तथा दूसरे की मीठी वाणी सुनूं।

(6) सुदिनत्व अहनाम – मेरा यह दिन तथा रात्रि अच्छे ढंग से बीते। इस अहर्निश अवधि में मुझसे कोई पाप न हो। इस अवधि में कोई विपत्ति, आकस्मिक संकट मुझ पर न आवे। यदि आ जावे तो मैं उसका साहस, आत्मविश्वास तथा वीरत्व से सामना कर सकूँ।

शास्त्रों में कहा गया है – बुद्धिमानों का समय वेदों और शास्त्रों के विचार में, अध्ययन, अध्यापन, प्रचार–प्रसार में व्यय होता है, किन्तु मूर्खों का व्यसन, निद्रा और कलह में व्यतीत होता है। भले कर्म करेंगे, तो भले दिन बनेंगे। इस हाथ ले उस हाथ दे।

इसीलिए आर्यों की दिनचर्या प्रातःकाल की प्रार्थना – ऋग्वेद के पाँच मंत्र – प्रातरग्निं प्रात्तरिन्द्रम् से लेकर पुरएता भवेह .... तक वे 'वाचन से प्रारम्भ होकर रात्रि को शयन करने के पूर्व यजुर्वेद के छः मंत्रों यथा यद्जाग्रतो दूरमुदैति से लेकर सुषारथिरश्वानिव .... तन्मे मनः शिव संकल्पस्तु (यजु. 34–1 से 34–6 तक) पाठ करने से होती है।

इन पंक्तियों के लेखक का यह निजी अनुभव है की दिनचर्या में इनको स्थान देने पर अनिष्ट दूर और रात–दिन शांति और सुख से व्यतीत होता है। प्रभु कृपा करें ..... सब प्राणियों में सुख–शांति हो तथा सभी प्राणियों में सद्भावनाएँ हों। सभी निरोगी रहे, सभी दीर्घायु हों। सब धन्य–धान्य से परिपूर्ण हों।

'सुकिरण' अ 13 सुदामा नगर इन्दौर–452009 (मध्य प्रदेश)

आर्य समाज का मौलिक आधार

– स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

सर्वश्रेष्ठ अध्येताओं के अनुसार हिमालय के आस–पास ही मनुष्य का अवतरण हुआ है। वहीं से उसकी संस्कृति का और मानवजाति की यात्रा का प्रारंभ होता है। वेद के दिव्य वाक्य मानवजाति के जीवन के आधार बने। कुछ काल प्रेम और आनन्द से रहने के बाद यहीं से मनुष्य समस्त संसार में बिखर गये। नयी परिस्थितियों ने मनुष्य जाति को नई भाषा, नये रीतिरिवाज और नये मानदण्डों से सम्पन्न कर दिया। इसीलिए आज हम विविधता के संसार में निवास कर रहे हैं।

वेद समस्त मानवजाति की अटूट और अमूल्य निधि है। वैदिक ज्ञान के आलोक से समस्त संसार आलोकित हो उठा। कालोपरान्त ज्ञान के इस अप्रतिहत प्रवाह में अनेक विषाक्त धाराओं का सम्मिश्रण हो गया और ज्ञान विज्ञान की पावन वैदिक धारा ऐसी बदली कि उसको पहचानना भी कठिन हो गया। वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार की आवश्यकता का अनुभव होने लगा। ऐसे संकटमय युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने वैदिक ज्ञान की ज्योतिर्मय परम्परा को पुनर्जीवित किया।

१८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना कर धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति का शंख फूंक कर नवयुग का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द ने वेद पठन–पाठन का अधिकार सबको प्रदान किया। वेद की शिक्षाओं को समान रूप से सबके लिए उपादेय बताया। सन्निहित स्वार्थों के कारण भारत ही नहीं अनेक देशों में नए धार्मिक सम्प्रदाय बन गए। अनेकानेक मतमतान्तरों ने जन्म लिया। उनके अन्धविश्वासों पर स्वामी दयानन्द ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया। स्वामी जी ने धर्म के स्वाभाविक, सहज, सार्वभौम स्वरूप का परिचय कराया। मानव जाति की एकता एवं अखण्डता पर बल देते हुए उन्होंने मानवता के मंगलमय मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

परमात्मा

वेद का धर्म एकेश्वरवादी है। वेदानुसार परमेश्वर एक है अनेक नहीं। वह सनातन है और ज्ञान का शाश्वत् स्रोत है। वही परमेश्वर हमारा आश्रय है और सृष्टि का कर्त्ता है। वह दयालु तथा न्यायकारी है। परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान् है। वह निराकार तथा अजन्मा है। वह सत्, चित् एवं आनन्द है। ऐसा ही परमेश्वर मानने और पूजने योग्य है। परमेश्वर सम्बन्धी नाना अनर्गल धारणाओं से स्वामी दयानन्द ने हमें मुक्त किया। सत्यज्ञान से, सत्यनिष्ठ कार्य से, सेवाभाव से और योगाभ्यास से ही परमेश्वर की प्राप्ति सम्भव है, ऐसी उन्होंने उद्घोषणा की।

जीवात्मा

वैदिक धर्मानुसार जीवात्मा असंख्य हैं। प्रत्येक जीवात्ना अपने कर्मो के लिए उत्तरदायी है। पशु–पक्षी भोग–योनियां हैं। मनुष्य ही एक–मात्र उभययोनि है। पशु–पक्षी सहजवृत्ति से अपना–जीवन यापन करते हैं। मनुष्य बुद्धि और विवेक से काम लेता है। जन्म–मरण का चक्र वृतिवत्–काल से चला रहा है। धूप–छांह की तरह सुख–दुख जीवन के साथ है, किन्तु मनुष्य परमेश्वर की शक्ति, परोपकार, सदाचार आदि के द्वारा मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर सकता है। मुक्तावस्था शाश्वत् नहीं है क्योंकि सान्त कर्मो का अनन्त फल कदापि नहीं हो सकता।

परमात्मा और जीवात्माएं पृथक् सत्ताएं हैं। परमात्मा एक है और जीवात्माएं अनेक हैं। परमात्मा ज्ञान और आनन्द का स्रोत है परन्तु जीवात्माएं ज्ञान और आनन्द के लिए परमात्मा पर निर्भर हैं। परमात्मा सृष्टि का कर्त्ता और जीवात्मा भोक्ता है। परमात्मा अशरीरी और जीवात्मा 'शरीरी है। परमात्मा अजन्मा और जीवात्मा 'शरीर के माध्यम से जन्म–मरण के चक्र में आता जाता है। परमात्मा कर्माध्यक्ष है और जीवात्मा शुभाशुभ कर्मों का कर्त्ता और उनके फलों का भोक्ता है। परमात्मा सर्वदा–मुक्त है किन्तु जीवात्मा मुक्ति और बन्धन को प्राप्त होता रहता है।

प्रकृति

वैदिक सिद्धान्तानुसार परमात्मा तथा जीवात्मा के सदृश प्रकृति भी अनादि है। ये तीनों तत्व सदा से हैं और सदा रहेंगे। आद्य प्रकृति का कोई रूप रंग नहीं। आद्य प्रकृति के सम्बन्ध में कुछ भी कहना अत्यन्त कठिन है। परमात्मा की शक्ति प्रकृति को नाना रूपों और नाना रंगों में परिवर्तित कर सकती है। परमात्मा के तपस् से प्रकृति सृष्टि की संरचना करती है। अभाव से भाव की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। बिना प्रकृति के सृष्टि बन ही नहीं सकती।

परमात्मा सृजन द्वारा ही अपने आपको अभिव्यक्त करता है। सृष्टि अटल विशवत् नियमों पर आश्रित है। वैदिक सिद्धान्तानुसार प्रकृति सत् एवं उद्देश्य पूर्व है। सृष्टि में नियम, व्यवस्था तथा उद्देश्य से परमात्मा की महिमा का दर्शन होता है। सृष्टि का सृजन, संहार निरन्तर चलता रहता है। इस सृष्टि से परमात्मा अहर्निश कर्म में लगा रहता है।

जीवन

परमात्मा सर्वोच्च नैतिक आदर्शों एवं मूल्यों का साकार रूप है। वैदिक परमात्मा एक अर्थ में नैतिक परमात्मा है। सत्य और दया का मूर्तिमान् रूप है। नैतिक–आदर्श नाना रूपों में अभिव्यक्त होते हैं। ''परमात्मा की रची सृष्टि का ज्ञान प्राप्त करो, उस ज्ञान से मानव–जाति को सम्पन्न करो'' यह हमारे जीवन का उद्देश्य है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि नैतिक मूल्यों के अभाव में जीवन का वैभव निस्तेज और निष्प्राण हो जाता है। साधना, स्वाध्याय और सत्पुरुषों का संग, उपासना आदि द्वारा नैतिक आदर्श को जीवन में उतारना सम्भव है, अन्यथा नहीं।

वेदानुसार सर्वोच्च नैतिक सत्ता है–परमात्मा। एतदर्थ परमात्मा की प्रार्थना–वैदिक उपासना पद्धति का अविभाज्य अंग है। परमात्मा को स्तुति–प्रार्थना उपासना की किञ्चित भी आवश्यकता नहीं है। स्तुति–प्रार्थना–उपासना से जीवात्मा परमशुद्धता को प्राप्त होकर सत्कर्मों को करने की सामर्थ्य से सम्पन्न हो जाता है। स्तुति में हम परमात्मा के गुणों की परिगणना करते हैं, जैसे–दयालुता, न्यायकारिता आदि। प्रार्थना में हम परमात्मा से विनम्र मांग करते हैं कि ये समस्त गुण हमारे जीवन में आ जावें। उपासना के द्वारा परमात्मा की समीपता से नया तेज, नया ओज, नया जीवन उपलब्ध होता है। जीवात्मा स्वपुरुषार्थ से ही परमात्मा की ओर अग्रसर हो सकता है। जीवात्मा और परमात्मा के बीच किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं।

समाज

मनुष्य समाज में रहता है। समाज में ही जन्मता और बढ़ता है। समाज से ही वह भाषा और संस्कृति भी पाता है। इस नाते समाज के प्रति इसका जो दायित्व है उससे वह मुँह नहीं मोड़ सकता। ईश्वरीय प्रेम का एक अर्थ समाज की निष्काम सेवा करना भी है। वर्णाश्रम व्यवस्था भी मनुष्य को अधिकारों के स्थान पर कर्त्तव्यों पर अधिक बल देती है। जब समाज कर्त्तव्यों की उपेक्षा कर अधिकारासक्त होता है, तब अव्यवस्था का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। किसी भी समाजोपयोगी कार्य को हीन या अधम नहीं मानना चाहिए। कार्यों की गुरुता तथा प्रकृति भिन्न होते हुए भी उसका आध्यात्मिक मूल्य एक–समान है। निष्ठा एवं सत्यता–सम्पन्न प्रत्येक कर्म मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है। कमजोर वर्ग की सहायता करना और उनकी उन्नति के लिए अवसर प्रदान करना, समाज में शान्ति एवं व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है, 'केवल शक्तिशाली को ही जीने का अधिकार है' ऐसा मानना सामाजिक सामञ्जस्य के सिद्धान्त पर निर्मम प्रहार है। स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के साथ–साथ ''सर्व–हितकारी'' शब्द का पुनः–पुनः प्रयोग करते हैं, क्योंकि स्वच्छन्दता सर्वनाश की जननी है।

सभी समाजों में कर्मकाण्ड का प्रचलन होना आवश्यक है। वैदिक धर्म में जीवन–निर्माणकारी सोलह संस्कारों का अनुपालन जीवन की सत्ता एवं महत्ता के वैदिक आदर्श के अनुसार जीवन का अन्तिम उद्देश्य पाने में परम सहायक है।

आर्य समाज की मान्यताओं और आस्थाओं के बारे में सार रूप में यह कह दिया गया है कि जीवन के ये आधारभूत सिद्धान्त अखिल मानव–जाति के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। हम सभी ''अमृत–पुत्र'', ''पृथिवी–पुत्र'' हैं। मानव जाति का मंगल करने वाले सभी विचारक, आचार्य, चिन्तक समान रूप से हमारे लिए आराध्य हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना द्वारा मानव महिमा का महादान कर मानव को दिव्य गरिमायुक्त करने का महत् प्रयत्न किया। पीड़ित प्रताड़ित मानवता का आह्वान किया और अपने प्रबल उद्बोधन से मानवता को प्रगति पथ पर अग्रसर किया।

विज्ञान

मैं आजीवन एक ही सूत्र का प्रचार करता चला आ रहा हूँ वह सार सूत्र है :–

'Rationalize your religion Spiritualize your science',-

धर्म को बौद्धिकता और विज्ञान को आध्यात्मिकता का आधार दो। आर्य समाज का यही मौलिक आधार है। इसी में मनुष्य जाति का मंगल है। विज्ञान ने हमें दैत्याकार शक्तियों का स्वामी बना दिया है। यदि हमने भीतरी आत्मिक शक्ति का विकास नहीं किया तो विज्ञान हमें महाविनाश की ओर ले जाएगा। इसमें सन्देह नहीं कि विज्ञान ने अनेक तथ्यों को समझने में हमारी सहायता की है और अन्धविश्वासों से छुड़ाया है। नयी सम्पन्नताएं भी दीं। विज्ञान नये सृजन का नाम भी हो सकता है और संहार का भी। विज्ञान संसार को स्वर्ग भी बना सकता है और नरक भी। धर्माधारित विज्ञान से ही मनुष्य का कल्याण अवश्य सिद्ध होगा।

अज्ञान और अन्धविश्वास पूरित धर्म–अधर्म ही है। ऐसा धर्म जीवन को दुःख प्रदान करता है। हमें आज के बुद्धिवादी युग में धर्म को तर्क संगत आधार देने होंगे। बुद्धि का दीपक लेकर हमें धर्म क्षेत्र में भी उतरना होगा। यदि मनुष्य को जीवित रहना है तो विज्ञान को अध्यात्म पर अधिष्ठित करना होगा और धर्म को तर्क संगत आधार देना होगा।

परम मंगलमय शक्ति के सम्मुख विनम्रता का भाव अपना कर निरन्तर सत्यान्वेषण में लगे रहकर मनुष्य जाति के कल्याण के लिए निष्काम भाव से कार्यरत रहें, यही वैदिक धर्म का आदर्श और उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का त्रिवार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी को पुनः चुना गया अध्यक्ष

अध्यक्ष को प्राप्त अधिकारों के अनुरूप स्वामी विजयवेश तथा श्री बिरजानन्द को कार्यकारी अध्यक्ष, स्वामी आदित्यवेश को राष्ट्रीय महासचिव तथा श्री राम निवास को किया गया कोषाध्यक्ष नियुक्त

बहन प्रवेश आर्या को सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् का अध्यक्ष एवं मुकेश आर्या को बनाया गया हरियाणा प्रान्तीय आर्य युवती परिषद् का अध्यक्ष

राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं प्रान्तों के अध्यक्षों की नियुक्ति के लिए स्वामी आर्यवेश जी को किया गया अधिकृत

टिटौली (9 जुलाई) : आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय त्रिवार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन आज आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासी स्वामी रामवेश की अध्यक्षता में स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में आयोजित किया गया। इस अवसर पर सर्वसम्मति से स्वामी आर्यवेश जी को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष चुने जाने के बाद स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज में युवाओं को जोड़ने का कार्य तेज किया जाएगा। आज समाज में फैल रहा नशा, धर्म के नाम पर फैल रहा पाखंड, जातिवाद, सांप्रदायिकता आदि कुरीतियाँ युवाओं को तेजी से प्रभावित कर रही हैं। इसलिए परिषद् युवा निर्माण अभियान के माध्यम से देश के युवाओं में नैतिकता, राष्ट्रीयता तथा वैदिक संस्कृति की भावना भरने का कार्य तेज करेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के उज्जवल भविष्य के लिए तथा राष्ट्र के नव–निर्माण के लिए युवा शक्ति को संगठित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र की रीढ़ वहां की युवा शक्ति होती है। युवाओं के ऊपर ही समाज एवं राष्ट्र का भविष्य टिका हुआ होता है। अतः सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् लाखों युवाओं को आर्य समाज की विचारधारा से ओत–प्रोत करके आर्य राष्ट्र के निर्माण में जुटेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी प्रान्तों के अध्यक्षों तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की कार्यकारिणी एवं अन्तरंग की सूची भी घोषित की। उन्होंने श्री दलबीर सिंह आर्य को हरियाणा, डॉ. नवीन आर्य को पंजाब, डॉ. हर्षवर्द्धन को हिमाचल प्रदेश, श्री भारत भूषण को जम्मू कश्मीर, डॉ. वीरेन्द्र पंवार को उत्तराखण्ड, श्री उत्तम कुमार आर्य को दिल्ली, श्री अरूण आर्य को बिहार, श्री दीपक आर्य को पश्चिम बंगाल, स्वामी सोमवेश को उड़ीसा, श्री कमल आर्य को मध्य प्रदेश, श्री हरहर आर्य को झारखण्ड, श्री ऋषिराज आर्य को छत्तीसगढ़, श्री यशपाल 'यश' को राजस्थान, स्वामी सम्यकक्रांतिवेश को महाराष्ट्र, श्री सत्य नारायण आर्य को आन्ध प्रदेश, श्री विवेकानन्द आर्य को कर्नाटक, श्री एस.पी. कुमार को तमिलनाडू, श्री के.एम. राजन को केरल, मेजर विजय आर्य को चण्डीगढ़, श्री मनु सिंह को आसाम, श्री विष्णुपाल को मणिपुर, श्री राजेश याज्ञिक को त्रिपुरा, श्री रमेश अग्रवाल को नागालैण्ड, श्री हवा सिंह हुड्डा को सिक्किम, आचार्य अखिलेश को अरुणाचल प्रदेश का प्रधान नियुक्त किया। इसी प्रकार सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की कार्यकारिणी भी घोषित की गई। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान श्री दलवीर आर्य के अतिरिक्त कार्यकारी प्रधान श्री सज्जन सिंह राठी, महामंत्री श्री अशोक आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री हरपाल आर्य को नियुक्त किया गया। सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की कार्यकारिणी तथा अन्तरंग बनाने का अधिकार बहन प्रवेश आर्या को दिया गया। अधिवेशन में परिषद् के सभी वरिष्ठ पदाधिकारी तथा सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूसरी जन्मशती के कार्यक्रम जोश–खरोश के साथ आयोजित करने का संकल्प लिया।

इस अवसर हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आगामी 23 सितम्बर (शहीदी दिवस) 2023 को जीन्द जिले के खटकड़ टोल पर करने का निर्णय लिया गया। इस आर्य महासम्मेलन में हरियाणा के सभी 22 जिलों तथा अन्य प्रदेशों से हजारों की संख्या में आर्य युवक/युवतियां एवं आर्य जनता भाग लेंगे। यह महासम्मेलन ऐतिहासिक होगा। अधिवेशन का कार्यक्रम उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती पर आयोजित ग्राम–कुटेसरा (मुजफ्फरनगर) में ऐतिहासिक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ भव्यता के साथ सम्पन्न

यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है केवल कर्मकाण्ड नहीं – स्वामी आर्यवेश

यज्ञ करने वाले की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं – डॉ. महावीर अग्रवाल

पूज्यपाद् गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत जी महाराज (पूर्व जन्मों में श्रृंगी ऋषि की उपाधि से सम्मानित) आचार्य अभयदेव जी की जन्मस्थली चरथावल के निकट ग्राम–कुटेसरा जनपद (मुजफ्फरनगर) में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में गुरुकुल पब्लिक स्कूल, कुटेसरा, मुजफ्फरनगर के श्रद्धानन्द परिसर के विशाल प्रांगण में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनांक 5 जून, 2023 से प्रारंभ होकर दिनांक 11 जून, 2023 तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक मनीषी प्रो. महावीर अग्रवाल प्रतिकुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय रहे। इस महायज्ञ के मुख्य यजमान तपस्वी याज्ञनिक श्री सत्यप्रकाश त्यागी एडवोकेट एवं श्रीमती सत्या त्यागी रहे। यह महायज्ञ इन याज्ञनिक पति–पत्नी ने अपने पुरुषार्थ एवं व्यक्तिगत अंशदान से सम्पन्न कराया। इस महायज्ञ के संयोजक डॉ. योगेश शास्त्री ने बताया कि इस महायज्ञ में देश एवं विदेश में प्रसिद्ध संन्यासीगण, वैदिक विद्वान् एवं आर्य नेताओं ने सम्मिलित होकर यज्ञ की शोभा को बढ़ाकर अपने व्याख्यानों से हजारों आर्यजनों को वैदिक सिद्धांतो एवं महर्षि दयानंद के मन्तव्यों से अनुप्राणित किया।

माननीय संन्यासी गणों में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, भारत में अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी, गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रो. सोमदेव शतांशु, प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य अनुज शास्त्री, गुरुकुल बरनावा के प्रधानाचार्य आचार्य अरविंद कुमार शास्त्री, गुरुकुल बरनावा के पूर्व प्रधानाचार्य आचार्य विनोद कुमार शास्त्री, कन्या गुरुकुल रूड़की रोहतक की आचार्या पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित आचार्या डॉ. सुकामा जी, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की प्राचार्या डॉ. सुमेधा जी, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार के स्वामी परमार्थ देव जी, गुरुकुल बरनावा के आचार्य गुरूवचन शास्त्री जी, आचार्य जयवीर जी, आचार्य विजयपाल जी, आचार्य डॉ. कृष्णावतार जी, आचार्य अमित जी, आचार्य प्रदीप जी, आचार्य कपिल जी, आचार्य परमवीर जी, आचार्य योगेन्द्र मेधावी जी, आचार्य डॉ. रविदत्त जी, सामवेद कण्ठस्थ आचार्य सामश्रवा जी, गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय के पूर्व स्नातक डॉ. ऋषिपाल जी, ब्र. मनीष जी, ब्र. नितेश जी, अध्वर्यु श्री मूलचन्द जी आदि वैदिक विद्वान यज्ञ में प्रतिभागी रहे।

इस अवसर पर एम्स ऋषिकेश के कैंसर विभाग के डीन डॉ. मनोज गुप्ता, सफदरजंग अस्पताल दिल्ली के प्रसिद्व पूर्व नेत्र सर्जन डॉ. के. पी. एस. मलिक और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश मोहम्मद ताहिर को उनके सामाजिक कार्यों, ईमानदारी एवं अपने–अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

सरदार सिंह धर्मार्थ चिकित्सालय के अध्यक्ष श्री अविनाश त्यागी ने बताया कि कार्यक्रम में यजमान के आसन पर सात दिनों तक एडवोकेट सत्यप्रकाश जी, श्री विनायक जी (राजा), श्री क्षेत्रपाल जी, श्री श्रवण कुमार त्यागी, श्री राजू (राजकुमार त्यागी), श्री अंकित जी, श्री ओमकार त्यागी जी स्थाई रुप से रहे। इस महायज्ञ में गुरुकुल पब्लिक स्कूल कुटेसरा के प्रधानाचार्य श्री आशुतोष गौतम एवं समस्त स्टाफ का विशष सहयोग रहा।

पी.जी. कॉलेज, नारनौल (हरियाणा) के सभागार में महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती धूमधाम के साथ मनाई गई

स्वामी दयानन्द जी ने पाखण्ड और अंधविश्वास का खण्डन कर वेदों के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के दस नियमों का पालन करने से मानव समाज की उन्नति होगी – आचार्य प्रद्युम्न

स्वतंत्रता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही – स्वामी आदित्यवेश

महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर हम राष्ट्र को विश्वगुरु बना सकते हैं – ओम प्रकाश यादव

व्यक्ति को नैतिक मूल्यों को आचरण में लाना चाहिए – राव अभय सिंह

महर्षि दयानन्द एक महान् दार्शनिक थे – डॉ. रणवीर सिंह

महेन्द्रगढ़ जिले के प्रत्येक गांव में आर्य समाजें स्थापित की जायेंगी – राम निवास

महर्षि का वेदों की ओर लौटो का नारा सार्थक करने के लिए हम सभी संकल्प लें – डॉ. आर.एन. यादव

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में महेन्द्रगढ़ जिले की सभी आर्य समाज की संस्थाओं व बुद्धिजीवियों के संयुक्त तत्वाधान में राजकीय महाविद्यालय नारनौल के सभागार में आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की शुरुआत सुबह 8 बजे यज्ञ के साथ हुई। यज्ञ का सम्पादन कप्तान जगराम आर्य ने किया। सम्मेलन के मुख्य वक्ता आर्य समाज के प्रखर विद्वान् संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त व्याकरण के विद्वान् आचार्य प्रद्युम्न, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश, केन्द्रीय विश्वविद्यालय पाली (महेन्द्रगढ़), महर्षि दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डॉ. रणवीर सिंह, हरिणाा सरकार के मंत्री श्री ओम प्रकाश यादव, नांगल चौधरी क्षेत्र के विधायक राव अभय सिंह यादव, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक वैदिक मिजाईल वैद्य नन्दराम आर्य, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ, विदुषी आर्य भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या, महाशय सत्यवीर सिंह आर्य दत्ताल आदि के अनेक गणमान्य महानुभाव सम्मेलन में उपस्थित थे।

मुख्य वक्ता के रूप में अपना उद्बोधन देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी दयानंद 19वीं सदी के एक ऐसे महान समाज सुधारक एवं क्रांतदर्शी सन्यासी थे जिन्होंने समाज में फैले पाखंड व अंधविश्वासों को दूर करने व लोगों को वेद सम्मत बातें बताकर वेद के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महर्षि दयानंद की पीड़ा का वर्णन करते हुए बताया कि समाज की दुर्दशा, गरीबी, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, छूआछूत तथा विदेशी गुलामी को देखकर महर्षि दयानन्द अत्यन्त व्यथित हो जाते थे और उसी के कारण उन्होंने संघर्ष तथा बलिदान का रास्ता अपनाया। वे देश की दुर्दशा को सहन नहीं कर सकते थे। अतः उसके विरुद्ध प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ करके बड़ी–बड़ी ताकतों को चुनौती देने का कार्य किया। वे सामाजिक कुरीतियों व पाखंड तथा अंधविश्वास रहित एक समता एवं समरसता पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे। स्वामी आर्यवेश जी ने नारनौल क्षेत्र के उन आर्य महानुभावों को अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि दी जिन्होंने इस इलाके में आर्य समाज की ज्योति को अपने अपूर्व योगदान से चलाये रखा था। उन दिवंगत आत्माओं में सर्वश्री पं. ताराचन्द वैदिक तोप,

शेष पृष्ठ 6 पर

स्वर्गीय आर्य नेता श्रीराम सिंह आर्य की सुयोग्य सुपुत्री श्रीमती हिमांशी आर्या एवं उनके पतिदेव श्री अमित कुमार के नव–निर्मित भवन का गृह प्रवेश कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

आर्य समाज के शीर्षस्थ संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी आशीर्वाद देने पहुंचे

3 मई, 2023 को जोधपुर में हमारे प्रेरणा स्रोत कर्मवीर स्व. श्रीराम सिंह जी आर्य (पूर्व उपमंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) व श्रीमति पुष्पा सांखला के दामाद श्रीमान अमित सिंह जी निर्बान के गृह प्रवेश की वैदिक विधान द्वारा संस्कार विधि श्री चेनाराम जी आर्य व श्री विमल शास्त्री जी के द्वारा की गई। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी (नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली), श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान), स्वामी आदित्य जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवा परिषद् हरियाणा) व बहन पूनम आर्या (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान) तथा बहन प्रवेश आर्या (राष्ट्रीय संयोजक बेटी बचाओ अभियान) का आतिथ्य प्राप्त हुआ।

जोधपुर से श्री भंवर लाल जी आर्य (अधिष्ठाता संचालक आर्य वीर दल, राजस्थान), वरिष्ठ आर्य समाजी श्री नारायण सिंह जी आर्य, श्री हरी सिंह जी (अध्यक्ष, आर्य वीर दल जोधपुर), श्री जितेंद्र सिंह जी आर्य (महामंत्री, आर्य वीर दल राजस्थान), श्री भंवर लाल जी हटवाल (पार्षद), श्री उम्मेद सिंह जी आर्य, श्री गणपत सिंह जी आर्य का आशीर्वाद प्राप्त हुआ व स्व. श्रीराम सिंह आर्य जी के बड़े दामाद श्री दीपक सिंह जी पंवार व बड़ी सुपुत्री जोधपुर शहर विधायिका श्रीमती मनीषा जी पंवार ने श्री अमित जी निर्बान व बहन हिमांशी आर्या को कार्यक्रम में पधारकर आशीर्वाद प्रदान किया।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य यजमान श्री अमित कुमार तथा श्रीमती हिमांशी आर्या तथा उनके समस्त परिवारजनों को अपनी ओर से तथा पूरे आर्य जगत की ओर से इस नवगृह प्रवेश के अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की। उन्होंने कहा कि परिवार के लिए यह घर प्रसन्नता, सुख–समृद्धि तथा आनन्द प्रदान करने वाला हो, ऐसी हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं।

बहन प्रवेश और पूनम आर्या ने एक शानदार स्मृति चिन्ह नये घर में लगाने के लिए हिमांशी और अमित को भेंट किया। पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुए इस विशेष यज्ञ से अन्य लोगों ने भी प्रेरणा प्राप्त की। कार्यक्रम के अन्त में जोधपुर शहर की लोकप्रिय विधायक श्रीमती मनीषा पंवार ने सभी आगन्तुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष

पी.जी. कॉलेज, नारनौल (हरियाणा) के सभागार में महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती धूमधाम के साथ मनाई गई

लाला ईश्वर दास आर्य, महाशय ताराचन्द आर्य, श्री छोटेलाल आर्य, श्री जगदीश आर्य सरपंच (बाद में संन्यास लेकर स्वामी सेवानन्द बनें), महाशय परमानन्द आर्य गनियार, महाशय नन्दलाल आर्य खेड़की, राव मूलचन्द आर्य बाच्छौद, महाशय जगराम आर्य बूंगारका, महाशय बनवारी लाल हितैशी नंगली, मा. प्रहलाल सिंह आर्य नंगली, महाशय गंगाराम आर्य, महाशय धर्मवीर आर्य सिसौट, राव हरिचन्द्र आर्य विगोपुर, वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य नारनौल, मा. रेमलदास आर्य, श्री मंगरियाराम आर्य व महाशय झांगीराम आर्य खरखड़ी मोहल्ला नारनौल, महाशय सन्तलाल आर्य, श्री सीताराम आर्य मोहम्मदपुर, मा. हनुमान आर्य धुलेड़ा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने अहिरवाल के पूरे क्षेत्र में किये गये कार्य के संस्मरण सुनाते हुए बताया कि मैं श्री रामनिवास आर्य तथा श्री बिरजानन्द जी के साथ सैकड़ों गांवों में आर्य समाज के सम्मेलन, युवकों के शिविर व जन–सम्पर्क का कार्य कर चुका हूँ। उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में 18 दिन तक नारनौल जेल में बन्द रहने का भी विशेष उल्लेख किया और उस आन्दोलन में जिन महानुभावों ने सहयोग किया था उनका धन्यवाद भी किया। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित आर्यजनों का आह्वान किया कि इस क्षेत्र के प्रत्येक गांव में आर्य समाज, आर्य युवक परिषद् व स्त्री आर्य समाज की स्थापना अवश्य करनी चाहिए। क्षेत्र में आर्य समाज का पहले से ही व्यापक प्रभाव रहा है। अतः उसको अब नये जोश–खरोश के साथ बढ़ाने की जरूरत है। स्वामी जी ने इस पूरे आयोजन के सूत्रधार और प्रदेशिक आर्य युवक परिषद् के पूर्व प्रधान भाई राम निवास आर्य तथा उनके सहयोगी सेवानिवृत्त प्रिं. डॉ. आर. एन. यादव का विशेष धन्यवाद किया कि उन्होंने पूरे क्षेत्र की आर्य समाजों तथा सभी प्रतिष्ठित महानुभावों को यहां एकत्रित किया है। आशा है वे भविष्य में भी आर्य समाज के कार्य को इसी प्रकार से गति प्रदान करते रहेंगे।

आचार्य प्रद्युम्न जी ने आर्य समाज के 10 नियमों की व्याख्या करते हुए उसे मूर्त रूप देने की प्रेरणा दी।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन में ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डाला।

डॉ. रणवीर सिंह जी ने महर्षि दयानन्द जी के दार्शनिक पक्ष पर विद्वतापूर्ण विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि विश्व के महान् दार्शनिक थे और उन्होंने त्रैतवाद का सिद्धान्त पूरे विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री श्री ओम प्रकाश यादव ने महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध किये गये कार्यों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और कहा कि हम महर्षि के दिखाये गये रास्ते पर चलकर ही हम अपने राष्ट्र को विश्वगुरु बना सकते हैं।

नांगल चौधरी क्षेत्र के विधायक डॉ. अभय सिंह यादव ने कहा कि यदि हम स्वामी दयानंद की विचारधारा एवं आर्य समाज के सभी 10 नियमों का पालन करें तो बहुत सारी समस्याएं दूर हो सकती हैं।

राजकीय महाविद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. पूर्णप्रभा ने अपने कॉलेज की ओर से कार्यक्रम के आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए हमें ऐसे कार्यों के लिए सेवा का अवसर दें।

स्वामी हंसानन्द जी कादीपुरी का मनोयोग से समारोह में सहयोग रहा।

डी.ए.वी. उच्च माध्यमिक विद्यालय नारनौल की यशस्वी प्रिंसिपल श्री वीरेन्द्र यादव तथा गांधी हाई स्कूल के प्रबन्धक श्री सुरेश कुमार सैनी का सम्मेलन में विशेष योगदान रहा और इन दोनों ही विद्यालयों से सैकड़ों की संख्या में छात्र–छात्राएं सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

श्री रामनिवास जी ने सभी आगन्तुक विद्वानों तथा श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया और डॉ. आर.एन. यादव ने मंच का कुशलता के साथ संचालन किया।

इस अवसर पर बहन कल्याणी आर्या ने अपने सुंदर मधुर गीतों से सभी श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। प्रमुख भजन उपदेशक महाशय नंदराम वैदिक मिसाइल ने प्रभावशाली भजनों के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। कैलाश कर्मठ, राम अवतार पुरुषार्थी, सतबीर दताल ने भी अपनी रचनाओं द्वारा श्रोताओं को उद्वेलित किया। कार्यक्रम में मा. ओम प्रकाश आर्य, डॉ. सुमेर सिंह यादव, श्री वासुदेव यादव, मा. श्री कृष्णा आर्य, श्री वीरेंद्र सिंह, श्री सत्यदेव आर्य, मा. नन्दलाल आर्य सैदअलीपुर, डॉ. चतर सिंह आर्य धुलेड़ा, श्री रोशनलाल आर्य, श्री विद्यासागर आर्य राता, श्री किशनचन्द्र आर्य मंत्री आर्य समाज खरकड़ी मोहल्ला, श्री अश्विनी आर्य खरकड़ी मोहल्ला, श्री इन्द्रलाल जी पूर्व प्रधान वेद प्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़, डॉ. प्रेमराज आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़, श्री वेद प्रकाश आर्य आर्य समाज संगीबाड़ा, श्रीमती कृष्णा आर्या आर्य समाज संगीबाड़ा, डॉ. रामअवतार रेवाड़ी, श्री जगमाल सिंह डी.पी., श्री रामानन्द आर्य, श्री धर्मवीर आर्य बहरोड़ संतोष मेमोरियल पुनर्वास केंद्र के डॉक्टर आर.एन. यादव, हीरा राय, अनिता जाखड़, श्वेता सिंह आदि महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा कॉलेज परिसर में पौधारोपण भी कराया गया। यह कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

महात्मा राममुनि की स्मृति में ग्राम–न्याणा, जिला–हिसार में आर्य सम्मेलन का शानदार आयोजन
स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

हिसार जिले के ग्राम–न्याणा में स्थित वैदिक आश्रम के संस्थापक महात्मा राममुनि की स्मृति में गत् दिनों आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी मुक्तिवेश जी, श्री दलवीर सिंह आर्य मुकलान, श्री जयवीर सोनी, समाजसेवी संजना सातरोड़ आदि ने भाग लिया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन श्री बलवन्त सिंह आर्य ने किया। उनके साथ उनके अन्य सहयोगियों ने कार्यक्रम की सारी व्यवस्था का दायित्व अपने कंधों पर लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। श्री रामनिवास आर्य भजनोपदेशक तथा श्री जसविन्दर सिंह आर्य की भजन पार्टियां कार्यक्रम में सम्मिलित हुई। यह कार्यक्रम लम्बे अन्तराल के पश्चात् हुआ था जिसे लोगों ने अत्यन्त पसन्द किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ और उन्होंने आर्य समाज की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज छपरौली के पूर्व प्रधान श्री राज सिंह आर्य जी का अचानक निधन

आर्य समाज छपरौली के पूर्व प्रधान श्री राज सिंह आर्य जी का गत् 1 जुलाई, 2023 को लगभग 82 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया है। श्री राज सिंह आर्य जी का अचानक चले जाना हम सबके लिए अत्यन्त दुःख का विषय है, किन्तु ईश्वरीय नियम को स्वीकार करने के अतिरिक्त हम सबके समक्ष और कोई विकल्प नहीं होता है। इस दुःख की घड़ी में पूरा आर्य जगत शोक संतप्त परिवार के साथ खड़ा है। आदरणीय श्री राज सिंह आर्य जी के अचानक निधन पर दुःख प्रकट करते हुए सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

आर्य समाज छपरौली के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र आर्य जी को मातृ शोक

आर्य समाज छपरौली के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र आर्य की माता जी का गत् 4 जुलाई, 2023 को लगभग 76 वर्ष की आयु में असमय निधन हो गया है। माता जी का अचानक चले जाना हम सबके लिए अत्यन्त दुःख का विषय है, किन्तु ईश्वरीय नियम को स्वीकार करने के अतिरिक्त हम सबके समक्ष और कोई विकल्प नहीं होता है। इस दुःख की घड़ी में पूरा आर्य जगत शोक संतप्त परिवार के साथ खड़ा है। माता सावित्री देवी जी एक धर्मपारायणा, सुसंस्कारित एवं कुशल सद्गृहणी थीं। माता स्व. श्रीमती सावित्री देवी जी के अचानक निधन पर दुःख प्रकट करते हुए सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

''सच की लड़ाई झूठ से''

– राघवेन्द्र कुमार दीक्षित

मेरे विचार से अगर कोई वैचारिक क्रांति आयेगी तो उसमें देश की महिलाओं का एक बड़ा हाथ होगा। सच और झूठ की लड़ाई में एक अदृश्य हाथ गृहिणी का होता है। महिला हमेशा सशक्त होती है, वह अपने अधिकारों का सदुपयोग करके घर में अच्छे संस्कार दे सकती है।

वैसे तो घर की पाठशाला में हमेशा सच्चाई, ईमानदारी व भाईचारे का सन्देश दिया जाता है पर कभी सोचा है कि अच्छे संस्कारों की पौधशाला से कभी–कभी जो पौधा बनता है वह भ्रष्ट आचरण क्यों करता है। नियमों व कानून का उल्लंघन करने में गर्व क्यों महसूस करता है। यह अधोपतन क्यों? कलुषित विचारधारा व आचरण क्या हमारे संस्कारों की होली नहीं जला रहे हैं?

छोटी–छोटी बातों से बात शुरू होती है। किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। आप मिलना नहीं चाहते। बच्चे को कहते हैं – कह दो घर पर नहीं हैं। हो गयी झूठ की पाठशाला की शुरुआत।

पड़ोसी के सामने उसकी झूठी तारीफ के पुल बाँधते हैं। परोक्ष में बच्चों के सामने बड़ा घटिया आदमी है ऐसा कहते हैं।

आप सोचते हैं यह एक मिथ्या झूठ है। परन्तु युवा मस्तिष्क की सी.डी. झूठ के पुलिंदे से जल्दी रक्तम होती है। स्थाई रिकॉर्ड हो जाता है। अमिट छाप जिसका सन्दर्भ जिन्दगी भर चलता है। मेरे पिता जी बड़े आदर्शवादी थे। ईमानदारी से वकालत करते थे। वकालत व ईमानदारी में कुछ विरोधाभास की बू आती है। उन्हें वकालत न करना मंजूर था किन्तु झूठा केस नहीं लेते थे। वे कहते थे कि सच्चाई जानने के बाद, सच्चे केस के लिए थोड़ा बहुत झूठ चलता है। वे अक्सर एक उदाहरण दिया करते थे –

अश्वत्थामा, द्रोणाचार्य का इकलौता बेटा था, उसे वे बहुत प्यार करते थे। द्रोणाचार्य को मारने के लिए एक षड्यंत्र रचा गया। अश्वत्थामा को एक अन्य स्थान पर लड़ने को ले गये और अश्वत्थामा नामक हाथी का वध कर दिया। सत्यनिष्ठ युधिष्ठिर ने घोषणा की कि – ''अश्वत्थामा हतो नरो या कुंजरो'' अश्वत्थामा मर गया–नर या हाथी?

''या कुंजरो'' शब्द के पहले शंखध्वनि करके द्रोणाचार्य को भ्रमित कर दिया गया और उनके लड़ने की इच्छा पुत्र वियोग में नहीं रही उनका वध कर दिया गया। वैसे युधिष्ठिर को झूठ का खामियाजा बाद में भरना पड़ा। सच के लिए लड़ाई थी। परन्तु यह बात मेरी सी.डी. में समाप्त हो गई। रिकॉर्ड हो गया। मस्तिष्क में सच की लड़ाई के लिए कभी–कभी झूठ का सहारा लेना पड़ता है। अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गलत रास्ता कभी–कभी पकड़ा जाता है और दूसरी कहानी बहेलिया की है। आखेट के लिए हिरन के पीछे दौड़ रहा था। हिरण एक जगह गायब हो गया। बहेलिया आखेट की खोज में पूछता है किधर गया। उत्तर मिलता है – पूर्व दिशा में। जब कि वह पश्चिम दिशा में गया होता है। हिरण को बचाने के लिए झूठ का सहारा लिया गया। बस क्या था – सी.डी. बन गई। थोड़ा बहुत झूठ बोल सकते हैं सच के लिए। आज तक याद है। कह नहीं सकता कितनी बार सी.डी. चलाकर दोबारा सुना है। हाँ इतना जरूर है कि माता जी व पिता जी को इस बात से अनभिज्ञ रखा कि मित्रों के साथ माँस, मछली व शराब का सेवन कर लेता हूँ। उनकी भावना की कद्र करना आवश्यक था। शायद एक मिथ्या झूठ की श्रेणी में आता है। सच बोलने की हिम्मत नहीं जुटा सका। खैर! सच व झूठ की लड़ाई हमेशा चलती रही है।

पूर्व सेना निवृत्त सेनाध्यक्ष वी. के. सिंह के पास किसी ने कहा सब चलता है। पहले भी चलता था आप भी लीजिए। जैसे एक शाश्वत भ्रष्टाचार जो एक शाश्वत सत्य की श्रेणी में चला गया हो। ''सब चलता है।'' यही तो क्या हमारी अंर्तात्मा के आगे एक पर्दा डाल देता है। एक उदाहरण देता हूँ। घर के पास देवीलाल पार्क है। पार्क से लौटते हुए ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करके उल्टे आना होता है।

शुरू में बड़ी झिझक लगी। मैं कभी भी ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन नहीं करना चाहता। प्रारम्भ में डरता–डरता सारी बत्तियाँ जलाकर हॉर्न बजाता हुआ निकला था। परन्तु समय के साथ मैं शेर हो गया। पुलिस की गाड़ी को भी उल्टा आते देखकर तसल्ली हुई कि बेझिझक बेरोकटोक ट्रैफिक अवज्ञा की जा सकती है। उल्टे रास्ते आता हूँ। सब चलता है और भी करते हैं। ''क्या करें। भ्रष्ट तंत्र फंडस देने के लिए पैसा मांगता है।''

क्या करें! वही करो जो सब कर रहे हैं। गंगा नहा लेना पाप धुल जायेंगे। वैसे तो आप समाज कल्याण ही कर रहे हो। पुण्य कमा रहे हो। सब चलता है।'' बहेलिया से हिरण को बचाना है। यह धारणा सब चलता है और भी कर रहे हैं। आप भी करिये। बड़ी खतरनाक स्थिति है। समझ नहीं आता। निकलना ही होगा। **साभार – नित्यनूतन से**

पृष्ठ 1 का शेष

प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों की बैठक सम्पन्न हुई

स्वामी आर्यवेश जी ने प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों से विशेष आग्रह करते हुए कहा कि आप सभी अपने–अपने प्रान्त में संगठनात्मक रूप से संगठित होकर सभी आर्यजनों को एक साथ लेकर चलें और आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करें। वर्तमान समय में आर्य समाज की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। इसलिए हम सभी को संगठित होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती को प्रत्येक प्रान्त में अपने–अपने स्तर पर मनाने का कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए तथा प्रान्तीय सरकारों से मिलकर महर्षि के जन्मोत्सव को सरकारी स्तर पर मनाने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। इसमें हमारा जहां भी जो भी सहयोग अपेक्षित होगा हम उसे करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

स्वामी जी ने कहा कि हमें विवादों को एक तरफ रखकर महर्षि की विचारधारा पर कार्य करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में पूरे देश में जिस तरह से पाखण्ड एवं अन्धविश्वास का बोलबाला है उससे समाज के प्रबुद्ध लोगों की निगाहें आर्य समाज संगठन पर टिकी हुई हैं। आर्य समाज सदैव से ही ऐसी कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज को बुलन्द करता रहा है। इसलिए आप सभी अपने–अपने प्रान्तों में संगठन को मजबूत करें तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करते हुए अन्तिम पायदान पर शोषित, वंचित, गरीब, मजदूर एवं बेजुबान लोगों की आवाज बनकर कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती मनाना सार्थक होगा।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को जिस तरह से नजर अंदाज किया जा रहा है वह अक्षम्य है। इसलिए महर्षि के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को जन–जन तक पहुंचाने के लिए हम सभी आर्यों को कमर कसनी होगी, हमें किसी के सहारे नहीं बैठना चाहिए।

इस बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी ने बताया कि हम पूरे छत्तीसगढ़ में स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए कृत–संकल्पित हैं और 2 जुलाई को एक बड़ा कार्यक्रम रायपुर में रखा है जिसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री पधार रहे हैं परन्तु कुछ शरारती तत्त्व उन्हें रोकने में लगे हुए हैं, परन्तु स्वामी दयान्नद सरस्वती के शिष्यों को कार्य करने से कोई रोक नहीं सकता। हम अपने कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे और महर्षि के विचारों को आगे बढ़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती को मनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ हर सम्भव सहयोग करेगी और अपने प्रान्त में जगह–जगह कार्यक्रम आयोजित करके आम जनमानस को महर्षि के बारे में जानकारी प्रस्तुत करेगी।

इसी प्रकार से अन्य प्रान्तों के पदाधिकारियों ने भी अपने–अपने विचार रखे और स्वामी आर्यवेश जी को आश्वस्त किया कि आप सदैव आर्य समाज के लिए कार्य करते रहें, आर्य समाज के ईमानदार कार्यकर्ता एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों पर चलने वाले विद्वान् तथा आर्यजन आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने के लिए सदैव तत्पर हैं। आप लोगों को जोड़ने का अपना प्रयास करते रहें यदि कोई नहीं जुड़ना चाहते हैं तो उसकी परवाह किये बिना आप आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा स्वामी दयानन्द जी के विचारों को पूरे विश्व में फैलाने का कार्य करते रहें। बैठक में पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी आदित्यवेश, स्वामी विजयवेश, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्रीमती इन्दूबाला देहरादून, श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट जालन्धर, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आचार्य कमल नारायण आर्य रायपुर, श्री आनन्द प्रकाश आर्य हापुड़, श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव खण्डवा, श्री जयनारायण आर्य महाराजपुर, श्री कमल आर्य नागदा जंक्शन, श्री विजय यादव भोपाल, श्री भंवरलाल आर्य जोधपुर, श्री रामनिवास आर्य नारनौल, डॉ. नवीन आर्य अमृतसर, आचार्य महावीर जी दयानन्द मठ चम्बा, श्री सुशील बाली एडवोकेट, श्री राम कुमार सिंह आर्य दिल्ली आदि महानुभावों ने भी अपने सुझाव प्रस्तुत किये। उत्तराखण्ड, पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बिहार में कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया। बैठक बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई।

तीन दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ हुआ सम्पन्न
ज्ञान, कर्म और उपासना के समन्वय से बनता है जीवन सर्वश्रेष्ठ – स्वामी आर्यवेश

जयपुर, 100वें साल में चल रहे श्री राम किशोर शर्मा एवं श्रीमती सन्तोष कुमारी की 77वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर परिजनों द्वारा ओमाश्रय सेवाधाम में तीन दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन का बृहद कार्यक्रम हुआ सम्पन्न।

कार्यक्रम संयोजक एवं ओ३माश्रय संचालक श्री यशपाल यश ने वताया कि आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री बिरजानन्द आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम के आयोजक वरिष्ठ पत्रकार श्री जयदेव शर्मा, डॉ प्रशांत शर्मा, श्री निशांत शर्मा, श्री हिमांशु एवं श्री अंशु शर्मा ने उपस्थित अतिथियों का सम्मान किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ऋग्वेद से ज्ञान, यजुर्वेद से कर्म, सामवेद से उपासना तथा अथर्ववेद से विज्ञान की जानकारी मिलती है। स्वामी जी ने कहा कि ज्ञान, कर्म और उपासना के समन्वय से ही जीवन सर्वश्रेष्ठ बनता है।

यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सोमदेव गुरुकुल मलारना चौड़, भजनोपदेशक ओमवीर आर्य एवं अमीचंद की जोड़ी तथा वेदपाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा हुआ। ओमाश्रय सेवाधाम के प्रभुजनों को 100 यूनिफॉर्म के लिए संकल्पित भारत विकास परिषद् तेजाजी नगर, जयपुर की ओर से श्री देवेश गोयल एवं श्रीमति सीमा गोयल और श्री भगवान दास गर्ग बाड़ी वालों ने 65 यूनिफॉर्म की राशि भेंट की। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 200वें जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में खटकड़ टोल जीन्द पर आयोजित होगा विशाल आर्य महासम्मेलन

हजारों की संख्या में आर्यजन होंगे सम्मिलित

महासम्मेलन में आर्य समाज का हरियाणा के लिए होगा भावी कार्यक्रम घोषित

जीन्द में 16 जुलाई, 2023 को आयोजित प्रमुख आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की बैठक में लिया गया महत्त्वपूर्ण निर्णय

जींद (हरियाणा) की जाट धर्मशाला में 16 जुलाई, 2023 (रविवार) को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य एवं नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में वरिष्ठ आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में निर्णय लिया गया कि 23 सितम्बर, 2023 शहीदी दिवस पर जींद जिले के खटकड़ टोल पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200ीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जायेगा।

बैठक में आर्य महासम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने सुझाव दिया कि प्रांतीय सरकार को स्वामी दयानंद जी 200वीं जन्म जयन्ती सरकारी तौर पर मनानी चाहिए। स्वामी जी ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में हरियाणा प्रान्त में 200 संगोष्ठी आयोजित की जायेंगी। 200 युवा निर्माण शिविरों का आयोजन किया जायेगा, 200 नई आर्य समाजें स्थापित की जायेंगी तथा 200 नई स्त्री आर्य समाजों का गठन होगा, 200 संगोष्ठियों का आयोजन, इसी प्रकार ऋषि दयानन्द के कृतित्व एवं व्यक्ति पर 200 स्कूलों में भाषण प्रतियोगिताएँ कराई जायेंगी। वानप्रस्थ तथा संन्यास की दीक्षाएं दी जायेंगी। जिला स्तर के सम्मेलन तथा विविध विषयों पर ट्रैक्ट वितरित करके महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाया जायेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में एक आयोजन समिति का गठन भी किया। जिसमें श्री रणधीर सिंह रेढू का उपाध्यक्ष तथा स्वामी आदित्यवेश जी को मुख्य संयोजक बनाया गया।

नशाबंदी परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश ने कहा कि खटकड़ का सम्मेलन आर्य समाज का अब तक का सबसे बड़ा कार्यक्रम होगा।

खेड़ा खाप के प्रधान श्री सतबीर पहलवान ने कहा कि आर्य समाज तथा खाप मिलकर सामाजिक बुराइयों को जड़ से मिटाने का संकल्प लें। उन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने में अपना पूरा योगदान देने की घोषणा की।

श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट ने कहा कि जींद जिले के प्रत्येक गांव से सम्मेलन में लोगों को लाने के लिए हम अपनी पूरी ताकत लगायेंगे और इस सम्मेलन को ऐतिहासिक बनायेंगे। उन्होंने कहा कि युवाओं को सम्मेलन से जोड़ने के लिए सम्मेलन स्थल के चारों ओर 50 गांव में विशेष अभियान चलाया जायेगा।

सम्मेलन के मुख्य संयोजक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि जीन्द जिले के प्रत्येक गांव में प्रचार अभियान के माध्यम से लोगों को प्रेरित किया जायेगा तथा दो भजन पार्टियां इस काम के लिए नियुक्त की जायेंगी।

श्री रणवीर सिंह पहलवान पूर्व जिला पार्षद ने जुलाना क्षेत्र के लगभग 80 गांव में जन–सम्पर्क की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और तन–मन–धन से सम्मेलन को सफल बनाने की घोषणा की।

श्री अनिल आर्य नरवाना ने भी अपना योगदान देने का मजबूत संकल्प लिया और कहा कि सम्मेलन को सफल बनाने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

खटकड़ ग्राम के सरपंच श्री सत्यवीर ने इस अवसर पर कहा कि पूरा खटकड़ गांव सम्मेलन की तैयारी में तन–मन–धन से सहयोग करेगा और उंचाना क्षेत्र के लगभग 40 सरपंचों का समूह इस सम्मेलन के लिए अपना पूरा योगदान देगा।

इस बैठक में श्री जगफूल सिंह ढिल्लो, श्री मांगेराम खटकड़, श्री केवल सिंह जुलानी, श्री देवेन्द्र सहारन, श्री अशोक आर्य, श्री इन्द्रजीत आर्य आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। बैठक में उपस्थित कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह दिखाई दे रहा था और सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी ने मजबूत संकल्प लिया। सम्मेलन का उपसंहार करते हुए स्वामी रामवेश जी ने सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया और प्रेरणा दी कि वे अभी से सम्मेलन की तैयारी में जुट जायें।

स्वामी आर्यवेश जी ने आयोजन समिति के लिए 22 संयोजक नियुक्त किये। आयोजन समिति के नाम इस प्रकार हैं – स्वामी रामवेश, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट उपाध्यक्ष, स्वामी आदित्यवेश मुख्य संयोजक, श्री सज्जन सिंह राठी संयोजक, श्री अशोक आर्य संयोजक, श्री रणबीर सिंह पहलवान संयोजक, श्री दलवीर सिंह आर्य संयोजक, श्री जगदीश सींवर संयोजक, डॉ. राजवीर सिंह संयोजक, श्री बाबूलाल आर्य संयोजक, श्री राम निवास, श्री सुरेन्द्र यादव रेवाड़ी, स्वामी विजयवेश, डॉ. गजराज सिंह, ब्र. राजदेव नैष्ठिक, श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य, चौ. अजीत सिंह पूर्व विधायक, बहन प्रवेश आर्या, प्रिं. आजाद सिंह, श्री दीपक कथूरिया, प्रो. आनन्द सिंह, श्री जसवीर सिंह आर्य, श्री श्यामलाल आर्य, श्री महेश आर्य, स्वामी सच्चिदानन्द, श्री अशोक आर्य–पंचकुला।

बैठक के बाद प्रमुख पदाधिकारी स्वामी आर्यवेश जी के साथ सम्मेलन स्थल खटकड़ टोल गये और वहां पर स्थान का पूरा निरीक्षण किया। शाम को प्रमुख पदाधिकारियों की बैठक स्वामी रामवेश जी के साथ उनके अर्बन स्टेट, जीन्द स्थित आश्रम पर हुई और सम्मेलन से सम्बन्धित विभिन्न कार्यों पर विचार–विमर्श किया गया।

डॉ. परविन्दर एवं श्रीमती सुमन के नवजात पुत्ररत्न का नामकरण संस्कार

स्वामी आर्यवेश जी के ब्रह्मत्व में बड़े समारोह के साथ किया गया

नवजात शिशु का नाम 'अयांश' रखा गया जिसका स्वागत उपस्थित परिवारजनों, सम्बन्धीगण तथा मित्रगणों ने तालियों के गड़गड़ाहट के साथ किया। अयांश को इस अवसर पर सभी वरिष्ठ लोगों ने आशीर्वाद प्रदान किया। आशीर्वाद देने वालों में युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम तथा बहन प्रवेश आर्या, कर्नल आर.के. सिंह तथा डी.एस.पी. अर्जुन सिंह जी, अयांश के दादा मास्टर नफे सिंह तथा श्री रामलाल जी आदि के अतिरिक्त मास्टर प्रदीप कुमार जी (डा. परविन्दर के अग्रज), डॉ. दीपक कुमार जी (अयांश के मामा), श्री विनीत सिंह (अयांश के चाचा), श्री सज्जन राठी, मा. अजीपाल, श्री अशोक आर्य, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री अजय कुमार (अयांश के चाचा), श्री अजय, श्री मनीष, श्री विनेश, श्री विनय, श्री अमित (सभी अयांश के चाचा), अयांश की परवरिश तथा देखभाल में सर्वाधिक समय देने वाली बहन मूर्ति देवी, बहन शशिबाला, श्रीमती चन्द्र प्रभा, श्रीमती कृष्णा, श्रीमती शकुन्तला देवी, श्रीमती विमला देवी आदि ने भी इस भाग्यवान बालक को प्यारभरा आशीर्वाद देकर उसके उत्तम स्वास्थ्य दीर्घायुष्य, तेज एवं ओज बल की कामना की।

स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर सभी परिवारजनों को विशेष रूप से डॉ. परविन्दर और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन को बधाई एवं साधुवाद देते हुए अपने आशीर्वचनों में परमपिता परमेश्वर का धन्यवाद किया कि परिवार में इस नवजात शिशु का आना अनेक खुशियों और सुख–समृद्धियों, यश कीर्ति से भरपूर होगा। उन्होंने मा. नफे सिंह जी और उनके सभी भ्राता सर्वश्री कर्नल आर.के. सिंह, डी.एस.पी. अर्जुन सिंह, श्री रामलाल जी आदि को भी अपनी शुभकामनाएं तथा बधाई दी। परिवार की ओर से सभी आगन्तुक अतिथियों तथा मित्रजनों एवं सम्बन्धियों के लिए सहभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी और एक आनन्द का वातावरण सबके हृदय को उल्लासित कर रहा था। इस पूरे कार्यक्रम में बहन प्रवेश आर्या ने अपने विशेष संयोजन से व्यवस्था को समुचित बनाने में मुख्य दायित्व निभाया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।